आर्थिक गतिविधि और उसके निर्धारक तत्व: भारतीय राज्यों का पैनल विश्लेषण

इस पेपर में राज्यस्तरीय भारतीय डाटा का प्रयोग करते हुए आर्थिक गतिविधि पर पड़ने वाले मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों और साथ ही, अन्य समष्टिआर्थिक तत्वों के प्रभाव का आकलन किया गया है। चूंकि स्थानीय कारकों और वहाँ की राज्य सरकारों की नीतियों के कारण अलग-अलग राज्यों में आर्थिक गतिविधि भिन्न-भिन्न हो सकती हैं, निर्भर चरों और संभाव्य व्याख्यात्मक चरों दोनों में और अधिक परिवर्तनशीलता लाने से इनमें निहित आर्थिक संबंधों को अच्छी तरह पहचानने में सहायता मिल सकती है। अनुभवजन्य विश्लेषण से इस बात की पुष्टि होती है कि आर्थिक गतिविधि को सुस्थिर बनाने में प्रतिचक्रीय मौद्रिक नीति की भूमिका होती है। बैंक क्रेडिट में वृद्धि से आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा मिलना मौद्रिक नीति के परिचालन में ब्याज-दर चैनल के साथ-साथ क्रेडिट चैनल के प्रभाव की ओर संकेत करता है। यह देखा गया है कि सार्वजनिक निवेश के कारण आर्थिक गतिविधि का अंतरागमन बढ़ा है जबकि अन्य राजकोषीय खर्चों से आर्थिक गतिविधियों का बहिर्गमन होता है। अतः, खर्चों को पूंजीगत परिव्यय की ओर उन्मुख करने के साथ-साथ एक विवेकपूर्ण राजकोषीय नीति से उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।